Review Of Research
Vol.2,Issue.1 ,Oct; 12pp.1-4
ISSN:-2249-894X

Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

महात्मा गांधी की सांस्कृतिक परिवर्तन की अवधारणा और जनसंचार माध्यम

उमा त्रिपाठी , धरवेश कठेरिया

प्रोफेसर (पीएच.डी.) एवं डीन, कला संकाय
पूर्व विभागाध्यक्ष, संचार अध्ययन एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविधालय जबलपुर (मध्य प्रदेश)
सहायक प्रोफेसर
संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा (महाराष्ट्र)

सारांशः

संचार माध्यम और संस्कृति के संबंधों का आपसी तालमेल उसी समय से माना जा सकता है जबसे हमारे समाज में संस्कृति के मानक रूपों की पहचान की गई और जब से संचार माध्यमों का समाज में (मनुष्यों के बीच परस्पर संचार करने की प्रक्रिया) आगमन होता है। प्रस्तुत अध्ययन में महात्मा गांधी को संचार माध्यमों का सांस्कृतिक परिवर्तनों में क्या दृष्टिकोण है? और वे किस प्रकार हमारी सांस्कृतिक के मूल्यों का संरक्षण करते हैं और किस प्रकार संस्कृति को विघटन की ओर ले जाते हैं। अध्ययन में गांधी जी को भारतीय संस्कृति के प्रति क्या अवधारणा रही है ? और वे सांस्कृति परिवर्तन को समाज के लिए किस तरह उपयोगी मानते है। इस अवधारणा में संस्कृति के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

संस्कृति और जनमाध्यमों के आपसी संबधों को भी इस अध्ययन में गांधी जी के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है। यह अध्ययन भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों को सांस्कृतिक परिवर्तन के नजरिए से देखने का प्रयास करता है। उक्त अध्ययन में सांस्कृतिक परिवर्तन के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव को संतुलित नजरिए से देखने का प्रयास किया गया है। सांस्कृतिक परिवर्तन के विभिन्न बिंदुओं को इस अध्ययन में विस्तार से समझाते हुए सांस्कृतिक परिवर्तन में जनमाध्यमों की उपादेयता पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावनाः

''समाचार पत्र एक जबरदस्त शक्ति है, किंतु जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गांव के गांव डूबो देता है और फसल को नष्ट कर देता है उसी प्रकार कलम का निरंकुश प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है। यदि ऐसा अंकुश बाहर से आता है तो वह निरंकुशता से अधिक विशैला सिद्ध होता है। अंकुश अंदर का ही लाभदायक हो सकता है।'' महात्मा गांधी

गांधी संचार माध्यम की शक्ति को पहचानते थे उनका मानन था कि पत्रकार को अपने उपर नियंत्रण रखते हुए लेखन का कार्य करना चाहिए। वह यह भी मानते थे कि जो कार्य लड़ाई, संघर्ष और हिंसा से नही किया जा सकता है वह कार्य तेज तर्रार पत्रकार अपनी लेखनी के माध्यम से कर सकता है। वह समाज में परिवर्तन ला सकता है, समाज को बदल सकता है। इसी कारण महात्मा गांधी ने 1933 में प्रकाशित हुए हरिजन समाचार पत्र के माध्यम से समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, वर्गवाद जैसी समस्या को समाज से उखाड़ फेंकने का आहवान किया।1

गांधी ने हमेशा अंदर से अंकुश की बात कही वे हमेशा यह मानते थे कि समाज के हर व्यक्ति को सामाजिक ताने–बाने का ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभाव समाज के प्रत्येक सदस्य पर होता है इसलिए अंकुश अंदर से आवश्यक है क्योंकि अंदर का अंकुश सांस्कृतिक परिवर्तन से होने वाले प्रभावों से लड़ने की क्षमता विकसित करता है।

संचार माध्यम और सांस्कृतिक परिवर्तन के संबंध में अनेकों प्रश्न उठने स्वाभाविक है। संचार माध्यम और उनके माध्यम क्या हो सकते है, ये साधन परिवर्तन के वाहक कैसे बन सकते है, संस्कृति को बनाए रखने या उसमें परितर्वन और रूपातंरण के लिए ये साधन किस प्रकार माध्यम हो सकते है और वैश्वीकरण के चलते विभिन्न संस्कृतियों में कुछ अंतर्विरोध कैसे पैदा हो गए है यह विषय गंभीर है।

संचार माध्यम आधुनिक समय में सांस्कृतिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण साधन है। आज जिस गति में विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में सूचनाओं का आदान–प्रदान हो रहा है, उससे सामाजिक सांस्कृतिक संरचना पर व्यापक प्रभाव देखेन को मिलता है। संस्कृति के प्रभाव के संबंध में गांधी जी कहते थे – मैं अपने घर के चारों ओर उंची–उंची दीवीरें नहीं खड़ी करना चाहता। मैं अपने घर की खिड़कियों को भी बंद नहीं रखना चाहता हूँ। मैं दुनिया की हर संस्कृति के लिए अपने घर की खिड़कियां खुली रखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि संस्कृति की हर बयार मेरे घर से गुजरे, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि हवा के इस झोंके में मेरे पैर उखड़ जाए। मैं किसी के घर में घुस पैठिए, भिखारी या दास की भांति भी नहीं रह सकता।2

गांधी किसी भी संस्कृति का विरोध नहीं करते थे। उनका मानन था कि किसी भी समाज को अपनी संस्कृति बचाने के लिए किसी दूसरी संस्कृति का विरोध नही करना चाहिए, बल्कि अपनी संस्कृति को इतना मजबूत करना चाहिए कि किसी अन्य संस्कृति के आक्रमण से वह विलुप्त न हो जाये, बल्कि आक्रमणकर्ता की संस्कृति को भी स्वयं में सम्मिलित कर लें। गांधी ने हमेशा अपनी संस्कृति को सशक्त बनाने की बात की और संस्कृति को सशक्त बनने में वह संचार माध्यमों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते थे। आज जनसंचार माध्यमों की भूमिका बेशक समाज और संस्कृति के हित में नहीं है, वह चाहे देशी मीडिया हो या विदेशी, सांस्कृतिक खतरा आज हर सभ्यता पर मंडरा रहा है।

आज अधिकांश दुनिया को, अमरीका में निजी टेलीविजन के नियम–कायदों से संचालित खून, नशे और विज्ञापन की संघातिक कॉकटेल ने जीत लिया हैं।3 जिसका असर भारतीय सिनेमा पर भी देखने को मिलता है अब पश्चिमी संस्कृति का स्वाद भारतीय चख चुके है।

Please cite this Article as : *उमा त्रिपाठी* **,** *धरवेश कठेरिया* **:** *महात्मा गांधी की सांस्कृतिक परिवर्तन की अवधारणा और जनसंचार माध्यम* **: Review Of Research (Oct; 2012)**

सांस्कृतिक और वित्तीय दोनों ही स्तरों पर, अमरीका खासतौर पर एक एकीकृत पूंजी सत्ता बना हुआ है।4

संचार क्रांति के साथ पूंजीवाद के संबंधों की परीक्षा तब तक अपर्याप्त है जब तक कि इसके सांस्कृतिक पक्ष की भी परीक्षा न की जाए।5 यही वजह है कि पूंजी के भूमंडलीयकरण के साथ–साथ संस्कृति के भूमंडलीकरण का प्रश्न भी उपस्थित हो रहा है।6 इसके लिए विश्व के सभी देश अपनी–अपनी संस्कृति को लेकर संघर्ष कर रहे है। इस क्षेत्र में अमरीकी वर्चस्व एक ज्वलंत सच्चाई है इसलिए यह स्वाभाविक है कि विश्व संस्कृति के नाम पर दरअसल अमरीकी संस्कृति का विश्व व्यापी प्रसार किया जा रहा है।7

सांस्कृतिक परिवर्तन के इसी प्रभाव को देखकर ऐसा कहा जा सकता है कि विश्व की हर संस्कृति पर कही न कही पश्चिम का प्रभाव देखने को मिलता है। संस्कृतियों के बीच आदान–प्रदान विश्व मानवता के हित में रहा है।8 इस बात को महात्मा गांधी पहले ही मान चुके थे।

आज इस बात को नाकारा नही जा सकता है कि विश्व सांस्कृतिक व्यवस्था में व्याप्त असमानताएं पहले की तुलना में प्रबल हुई है।9 मीडिया के विकास का एक दिलचस्प पहलु यह भी है।10 मीडिया के विस्तार ने सूचना ही नहीं शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्र में भी जबरदस्त हस्क्षेप किया है।11 जनसंचार माध्यमों की बढ़ती शक्ति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इराक के खिलाफ बुश–ब्लेयर का युद्ध जितना बमों और मिसाईलों से लड़ा गया, उससे ज्यादा नही ंतो कम से कम उतना ही, मीडिया 'बम' से लड़ा गया।12 ऐसी कई महत्वपूर्ण घटनाएं संचार माध्यमों की शक्ति को उजागर करती है। संस्कृति और जनसंचार माध्यमों का आपसी संबंध बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस बात को गांधी अच्छी तरह समझते थे।

गांधी कहते है कि कोई भी देश नकलचियों की जमात पैदा कर राष्ट्र का रूप धारण नहीं कर सकता... मैं अनेक कई नई बाते लिखना चाहता हूँ, लेकिन ये सब भारतीय मिट्टी पर ही लिखी जानी चाहिए।13 गांधी हमेशा कहते थे कि राष्ट्र के जनसंचार माध्यमों की अपनी एक अलग सोच होनी चाहिए जो राष्ट्र की अपनी धरोहरों के अनुरूप हो, जो अपनी संस्कृति का निर्वाहन करती हो। संचार माध्यमों की अपनी भाषा होनी चाहिए न कि वह किसी अन्य राष्ट्र की नकल करें।

संस्कृति में समन्वयन तथा नये उपकरणों को पचा कर आत्मसात करने की अदभुत योग्यता है।4 भारतीय संस्कृति की विशेषता को लोग बड़े विस्मय से देखते है, भारतीय संस्कृति के संदर्भ में इतिहासकार मिस्टर डाडवेल ने लिखा है कि भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियां आ–आकर विलीन होती रही है।15 अनेक संस्कृतियों और जातियों के मिलन से भारतीय संस्कृति में जो एक प्रकार की विश्व जनीनता उत्पन्न हुई, वह संचार के लिए सचमुच वरदान हें और पिछले दो सौ वर्षों से सारा संसार उसका प्रशसंक है।16 भारत में संस्कृतियों का जो विराट समन्वय हुआ है, राम कथा उसका अत्यंत उज्ज्वल प्रतीक है।17

भारत की संस्कृति किसी मत सिद्धांत से बंधी–घिरी नहीं है। वह नागरिक मूल्यों पर आधारित संगम–समागम को स्वीकार करने वाली ऐसी संस्कृति थी, और हे, जिसमें अतीत की स्वीकृति एंव निजीय–जातीय रीति–नीति की स्वतंत्रता है।18 इस शुद्ध चैतन्य के आकर्षण से कोई व्यक्ति बचा नहीं है।19 भारतीय संस्कृति ही स्थानीय संस्कृति में अच्छी तरह घुल–मिल गयी प्रतीत होती है।20 इसी कारण निःसंदेह मनुष्य में साहसिकता और आदान–प्रदान की इच्छा–प्रवृत्तियों के कारण सांस्कृतिक संबंधों में जीवन्तता आती है।21 भारतीय संस्कृति के प्रसार के पीछे मुख्य उद्देश्य व्यापारिक लाभ था।22 इस लाभप्रद व्यापार को, निःसंदेह, दक्षिण पूर्व एशिया के बारे में इस जानकारी ने और भी बढ़ावा दिया कि वहां बहुत सोना उपलब्ध हो सकता है।23 दक्षिण–पूर्व एशिया से जो व्यापारी और बौद्धयात्री भारत आते थे, वे भी यहां से कुछ परम्पराएं साथ ले जाते थे।24 इस पारस्परिक सहयोग से एक नयी संस्कृति का उदय हुआ, जिसमें भारतीयता का पुट प्रमुख था।25 भारतीय जहां भी बसे, वहां जो कुछ उनके पास था वह दिया, और जो कुछ वहां से ग्रहण करने योग्य था, उसे लिया।26

भारतीय संस्कृति का प्रचार–प्रसार यही नही खत्म होता है वह निरंतर अग्रसर होता रहता है। भारतीय संस्कृति ही एक मात्र विश्व की ऐसी संस्कृति है जिसका प्रभाव विश्व की अनेक संस्कृतियों पर पड़ा। भारतीय संस्कृति की छाप विश्व की अनेक संस्कृतियों पर देखने को मिलती है। तत्कालीन संचार साधनों के मंद होने पर भी दक्षिण–पूर्व एशिया के केंद्रीय स्थानों और भीतर सुदूर कोनों तक पहुंच गई थी।27

भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार के संबंध में क्चारिच वेल्स के ने लिखा है कि भारतीयकरण निरंतर चलता रहा।28 और भारतीय संस्कृति का प्रसार क्रमबद्ध पद्धति से हुआ।29

कुछ भी हो भारतीय संस्कृति एक ऐसी महान संस्कृति है जिसका संबंध विश्व की सभी संस्कृतियों से रहा। विश्व की सभी संस्कृतियां भारतीय संस्कृति में रची–खपी और समृद्ध हुई। भारतीय सांस्कृतिक संपर्क और प्रभाव का निश्चित प्रकार कुछ भी रहा हो परंतु इसका विस्तार व्यापक था और धार्मिक विचारों से लेकर कृषि एवं हस्तकला के तकनीकी क्षेत्र तक इसका प्रभाव पड़ा।30 भारतीय संस्कृति अनेक उतार–चढ़ाव के दौर से गुजरी उसमें अनेक संस्कृतियों के अंश, तत्व सामाहित हुए। भारतीय संस्कृति की इसी विशेशता को गांधी जी ने रेखांकित किया है।

गांधी जी कहते है कि हमारे समय की भारतीय संस्कृति अभी निर्माण की अवस्था से गुजर रही है। अनेक लोग यहां उन संस्कृतियों का एक मिश्रण तैयार करना चाहते है, जो इस समय एक दूसरे के विरोधी है। कोई भी संस्कृति अनन्य रहकर ज्यादा दिनों तक नहीं चल सकती।31

गांधी जी मानते थे कि किसी भी समाज की संस्कृति तब तक जीवित नहीं रह सकती है जब तक उस समाज की संस्कृति में दूसरे समाज की संस्कृतियों का मेल न हो। सह सत्य भी है कि किसी भी संस्कृति का विकास तभी संभव है जब उसमें दूसरी संस्कृतियों के तत्व आकर ना मिले। गांधी का दृष्टिकोन संस्कृति के संदर्भ में तालमेल की बात करता है। संस्कृतियों के मिलन की बात करता है। और कहीं न कहीं जनमाध्यमों की भूमिका इस दृष्टिकोन में सटीक बैठती है। आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी ने सांस्कृतिक दृष्टिकोन के सवाल को एक नया आयाम दिया है। एक ऐसा दृष्टिकोन जो भारत में पश्चिमीकरण की बढ़ती गति से उत्पन्न होने वाली जटिल समस्याओं के साथ महत्वपूर्ण तरीके से निपट सके। एक ऐसा दृष्टिकोन जो भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र में, विकास में, उत्थान में विरोध करने वाली ताकतों का उदय समाप्त कर सके। उनका नाश कर सके। आधुनिक संचार माध्यमों की बढ़ती सीमाओं और तकनीकी विकास ने विश्व की सभी संस्कृतियों को आपस में जोड़ने का काम किया है। यह जनसंचार माध्यमों की ही देन है कि आज भारत के अन्य देशो की संस्कृतियों से तालमेल बनते नजर आ रहे है, आज आम आदमी भी संस्कृति के पहलुओं को समझने की जिज्ञासा कहीं न कहीं अपने मन में समहित किये हुए दिखता है।

निष्कर्ष के रूप में हम देखते है कि गांधी की अपनी एक विचार धारा है। गांधी संस्कति के संबंध में हमेशा विस्तार का दृश्टिकोण अपनाते है। गांधी का दृष्टिकोन विश्व की सभी संस्कृतियों के लिए समान रूप से था। गांधी हमेशा कहते थे कि दो देशों की संस्कृति ही है जो उन्हें आपस में जोड़ती है अगर हमारी संस्कृति एक दूसरे में समाहित नहीं हो सकती है तो हमारे बीच कभी भी सांस्कृतिक रिश्ते, सांस्कृतिक आदान–प्रदान संभव नहीं हो सकता है। संस्कृति के आदान–प्रदान के लिए जनसंचार माध्यमों को गांधी सबसे सशक्त साधन, माध्यम मानते थे वे हमेशा कहते थे कि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति की झलक वहां के संचार माध्यमों में देखी जा सकती है। उनका मानना था कि जनसंचार माध्यमों पर दिखाए जा रहे कार्यक्रम उस देश की संस्कृति का निर्वाहन करते है। संस्कृति के विकास में संचार माध्यमों की शक्ति की उपादेयिता को नाकारा नहीं जा सकता है।

भारतीय संस्कृति पर जब 80 के दशक में पश्चिमीकरण के प्रभाव को देखा जा रहा था, तो उस समय भी संचार माध्यमों से ही उसका जवाब दिया गया तब के भारत के सबसे सशक्त संचार माध्यम दूरदर्शन ने इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। यही वह समय था जब दूरदर्शन पर 'हमलोग', 'नीम का पेड़', 'रामायण', 'महाभारत' और आगे चल कर 'भारत एक खोज' जैसे कार्यक्रमों का प्रसारण दूरदर्शन पर किया गया। जो कहीं न कहीं भारतीय संस्कृति का जीवंत प्रस्तुतिकरण था। जनसंचार माध्यमों के इस योगदान को भारतीय संस्कृति के सरंक्षण में मील के

पत्थर के रूप में देखा जाता है। गांधी जी संस्कृति को हमेशा एक परिवर्तनशील धारा मानते थे वह मानते थे कि किसी भी समाज की संस्कृति हो उसमें समाजस्य की अवधारणा नही है तो वह कभी विकसित नही हो सकती हो सकती ऐसी संस्कृतियों का हमेशा पतन ही होगा लेकिन वह भारतीय संस्कृति को इस दृष्टिकोण से कुछ अलम देखते थे उनका कहना था कि भारतीय संस्कृति में समाजस्य की भावना है इसीकरण भारतीय संस्कृति 5000 वर्ष पुरानी होने के बाद भी आज नई जीवंत नज़र आती है। गांधी जी का यही दृष्टिकोन भारतीय संस्कृति का सबसे वड़ा सच है।

सीमाएंः

·गांधी, सांस्कृति परिवर्तन और जनसंचार माध्यमों के सहसंबंध की ही व्याख्या अध्ययन की गई है।
·भारतीय संस्कृति पर एक मानक विश्व संस्कृति के प्रभाव की ही चर्चा की गई है इस अध्ययन में भारतीय संस्कृति पर किसी विशेष राष्ट्र और समाज की संस्कृति के प्रभाव की व्याख्या नहीं की गई है।
·अध्ययन भारतीय संस्कृति के संदर्भ में गाधी जी के दृष्टिकोण की चर्चा करता है।
·अध्ययन में समाज और संस्कृति के सहसंबंधों की विशेश रूप से चर्चा करने की कोशिश की गई है जिससे समाज और संस्कृति के सभी पक्षों को विस्तार दिया जा सके।
·संचार माध्यमों को गांधी जी एक सशक्त शक्ति के रूप में देखते है इस कारण माध्यमों के सकारात्मक दिशा में उपयोग को महत्व दिया जाना चाहिए। संचार माध्यमों में केवल इलेक्ट्रानिक माध्यमों को ही वरीयता दी गई है।

आवश्यक सुझावः

सांस्कृतिक परिवर्तन की अवधारणा और जनसंचार माध्यमों के महत्वपूर्ण योगदान को महात्मा गांधी दोनों की पारस्पर सहयोग की दृश्टि से देखते है। महात्मा गांधी समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन को सकारात्मक मानते थे उनका कहना था कि हर समाज को अपनी संस्कृति में लचीलापन रखना चाहिए। तभी वह विकासित हो सकती है। उक्त अध्ययन के संबंध में निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं–

·वर्तमान जनसंचार माध्यम सांस्कृतिक परिवर्तन की दिशा में संरक्षण की भूमिका निभाने में अक्षम नजर आ रहे है उनको अपनी यह भूमिका वदलनी चाहिए।
·प्रत्येक समाज को अपनी संस्कृति में लचीलापन रखना चाहिए तभी संस्कृति सकारात्मक तरीके से विकसित होगी।
·गांधी जी समाज और संस्कृति के बीच आपसी सहसंबंध की भावना को बढ़ावा देते थे उनका मानना था कि आपसी सहसंबंध से ही संस्कृति विकसित होगी।
·गांधी जी ने समाज और संस्कृति में परिवर्तन के बीच संतुलन बनाने में स्वानियंत्रण की आवश्यकता पर जोर दिया।
·गांधी जी संचार माध्यमों को एक शक्ति के रूप में देखते है इसलिए उस शक्ति के सकारात्मक उपयोग की बात को समाज के लिए हितकर मानते है ।

संदर्भ सूचीः

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1.महात्मा गांधी सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
2.महात्मा गांधी, इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स, पृष्ठ सं. 173, प्रकाशन नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1947
3.ई गेलियानो, नोट्सऑन इनीक्वैलिटी एंड इनकम्यूनिकेशन, मीडिया डेवलमेंट, पृष्ठ सं. 22,1996
4.रॉबर्ट डब्ल्यू, मैक्चेस्नी, इलेन मिकसिंस वुड, जान बेलेमी फॉस्टर, (संपादक) पूंजीवाद और सूचना का युग, पृष्ठ सं. 102, प्रकाशक–ग्रंथ शिल्पी, 2006
5.वही पृष्ठ सं. 11
6.वही पृष्ठ सं. 11
7.वही पृष्ठ सं. 11
8.वही पृष्ठ सं. 11
9.वही पृष्ठ सं. 11
10.वही पृष्ठ सं. 13
11.वही पृष्ठ सं. 14
12.वही पृष्ठ सं. 19
13.गांधी, इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स, पृष्ठ सं. 173, प्रकाशन नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1947
14.रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अय्याम, पृष्ठ सं. गअपपप, प्रकाशक लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006 (नवीन संस्करण)
15.वही पृष्ठ सं. 81
16.वही पृष्ठ सं. 82
17.वही पृष्ठ सं. 72
18.जैनेन्द्र कुमार, संस्कृति आस्था और तत्वदर्शन, पृष्ठ सं. 46, प्रकाशक पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
19.वही पृष्ठ सं. 77
20.दामोदर सिंहल, भारतीय संस्कृति और विश्व संपर्क, पृष्ठ सं. 138–139, प्रकाशक–मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1980
21.वही पृष्ठ सं. 148
22.वही पृष्ठ सं. 149
23.वही पृष्ठ सं. 149
24.वही पृष्ठ सं. 153
25.वही पृष्ठ सं. 153
26.वही पृष्ठ सं. 153
27.वही पृष्ठ सं. 153

28.वही पृष्ठ सं. 153
29.वही पृष्ठ सं. 155
30.वही पृष्ठ सं. 159
31.महात्मा गांधी, इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स, पृष्ठ सं. 183–184, प्रकाशक नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1947.

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1.सुधीश पचौरी, हमारा आईना है टीवी, कादम्बिनी, सितम्बर, दिल्ली, 2009.
2.भास्कर धोश, सिनेमा और समाज, रोजगार समाचार, 06.12 अप्रैल, दिल्ली, 2002
3.ब्रजेश्वर मदान, बाजार की छाया में विश्व सिनेमा, सहारा समय (साप्ताहिक), 18 दिसम्बर, 2004.
4.हिमांशु शेखर, मुनाफे का प्रसारण, रविवार परिशिश्ट, जनसत्ता, दिल्ली, 28 सिसंबर 2008
5.राजेंद्र यादव, सिनेमा और साहित्य, 25 जून, रसरंग परिशिश्ट, दैनिक भास्कर, भोपाल, 2006
6.सीन, मैक ब्राइड, रिपोर्ट–1980, मैनी वाइसेज वन वर्ल्ड, यूनेस्को
7.पी.सी. जोशी, कमेटी–रिपोर्ट–1986, एन इंडियन पर्सनैलिटी फाँद इंडियन टेलीविजन
8.संस्कृति (पत्रिका) अंक–12, अर्द्धवाशिर्क–2006, प्रकाशन–संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.
9.हंस, टेलीविजन विशेशांक, जनवरी, प्रकाशन–अक्षर प्रकाश प्रा. लि., नई दिल्ली, 2007.
10.आजकल (साहित्य और संस्कृति का मासिक), प्रकाशन–प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली.
11.भारतीय वाड्मय (हिंदी तथा अहिंदी भाशी क्षेत्रों के साहित्यिक–सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका), प्रकाशन–विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी.
12.एम.एन. श्री निवास, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, प्रकाशक– राजकमल प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1967
13.एस. आबिंद हुसैन, द नेशनल कल्चर ऑफ इंडिया, प्रकाशक–नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया 1956.
14.डॉ. विपिन विहारी सिंहा, भारत का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, प्रकाशक–ज्ञान प्रकाशन (पी.एंड.डी.) दिल्ली, 2008.
15.टानंद मिश्र, टेलीविजन एंड पापुलर कल्चर इन इंडिया, प्रकाशक–सेज पब्लिकेशन, दिल्ली, 1993
16.रवीन्द्र नाथ मुकजीं, भारतीय समाज व संस्कृति (नवम् संस्करण), प्रकाशक–विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7, 1991.
17.पूरन चंद्र जोशी, सुनील कुमार सिंह (अनुवादक), संस्कृति विकास और संचार क्रांति–बदलते परिप्रेक्ष्य, प्रकाशक–ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2001
18.महात्मा गांधी, इंडिया ऑफ माइ ड्रीम, प्रकाशक–नवजीवन पब्लिसिंग हाउस, अहमदाबाद, 1947.
19.www. tvguide.Com
20.www. tv4india.com
21.www. indiantelevesion.com
22.www. mediaresearch.com
23.www. ecxchange4media.com
24.www. deloi4te.com/in (Report, September 2011)